Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुवाद की समस्याएँ और समाधान

अनुराधा कल्याण शिंदे

प्रस्तावना-

ज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद यह एक प्रमुख विधा विकसित हुई है। इसके कारण ज्ञान का क्षेत्र समृद्ध हुआ है। अनुवाद हर एक क्षेत्र को लाभान्वित कर रहा है, जिसके कारण मनुष्य अपनी प्रगति के नए-नए सोपान पार कर रहा है। इस संदर्भ में भोलानाथ तिवारी लिखते है " अनुवाद को ज्ञान- वृद्धी के महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में भी देखा जाना चाहिए। अनुवाद तो विश्वज्ञान का झरोखा है। अनुवाद एक ऐसा वातायन है , जिससे समस्त विश्व के ज्ञान का आदान-प्रदान होता है।"1

अनुवाद सिर्फ ज्ञान का आदान-प्रदान ही नहीं करता बल्कि वह एक रोजगार का क्षेत्र भी बन गया है। साथ ही विश्व- संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने का कार्य अनुवाद कर रहा है। मानव सभ्यता में घटित नए एवं महत्वपूर्ण आविष्कार अनुवाद के माध्यम से ही संपूर्ण विश्व से उद्घाटित हो रहे है। संपूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में पिरोने का कार्य अनुवाद द्वारा ही किया जा सकता है। अनुवाद को चालना देने का यह महत्वपूर्ण कार्य विश्व की अनेक महत्वपूर्ण संस्थाएँ कर रही है। डॉ. जी गोपीनाथन लिखते है - "बींसवी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है और इस कारण से इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है। संप्रेषण के नये माध्यमों के अविष्कारों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उपनिषिधीय को साकार बना लिया है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी राष्ट्र में परस्पर अनुवाद की तो आवश्यकता है ही, लेकिन विश्वभाषाओं से भी अनुवाद की अनिवार्यता है। युनेस्को जैसी संस्थाएँ विश्वभाषाओं से अनुवाद की दिशा में कार्यरत हैं तो साहित्य अकादमी , नेशनल बुक में ट्रस्ट, ज्ञानपीठ आदि संस्थाएँ भारतीय भाषाओं के बीच अनुदान कार्य को विकसित कर रही है|"2

अनुवाद कार्य जितना महत्वपूर्ण और आवश्यक है उतना ही कठिन तथा जटिल है |अनुवाद करने के लिए एक प्रतिभा की आवश्यकता होती है |क्योंकी अनुवाद का कार्य एक चुनौती भरा कार्य होता है |अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे पुन: सृजन का आनंद प्राप्त होता है |लेकिन इस प्रक्रिया में अनेक समस्याओं का सामना अनुवादक को करना पड़ता है|इन समस्याओं के कारण अनुवाद के असफल होने की संभावना ज्यादा रहती है|

अनुवाद की समस्याएँ-

अनुवाद विभिन्न भाषाओं के बीच सेतू का कार्य करता हैं |विभिन्न संस्कृतियों , सभ्यताओं, धर्मो एवं सामाजिक स्तरो का अन्य भाषा मे अंतरन करने का सशक्त माध्यम अनुवाद होता है |इस प्रक्रिया के दौरान अनुवादक को अनेक समस्याएं आती है|अनुवाद के दो प्रकार होते है 1) सामान्य अनुवाद 2) विशिष्ट अनुवाद

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1) सामान्य अनुवाद की समस्याएँ

अ) स्त्रोत भाषा के मूल पाठ का पठण एवं संप्रेषण-

इस स्थिती में अनुवादक को मूल पाठ का पठन ध्यानपूर्वक करना चाहिए तथा उसे आत्मसात कर मूल पाठ को लक्ष्य भाषा में बोधगम्य शैली में प्रस्तुत करना चाहिए | पठन करते समय गलत बोध लिया तो अनुवाद भी गलत हो सकता है| साथ ही अनुवादक को मूल पाठ के संदर्भ अनुसार अपने ज्ञान की वृद्धी करनी पड़ती है अगर विषय सृजनात्मक है तो मूल के प्रतिकों को समझ लेना यह एक समस्या है एसे ही विज्ञान, प्रशासनिक, तकनीकी तथा मीडिया संबंधी विषय हो तो अनुवाद के सामने उपर्युक्त विषयों की शब्दावली की समस्या उत्पन्न होती है इसी कारण अनुवादक को एक बहुविध ज्ञाता होना चाहिये|

आ) शब्दों के सटीक प्रयोगों की समस्या-

स्त्रोत भाषा में आया शब्द सटीक रूप में लक्ष भाषा में परिवर्तित करना यह एक समस्या होती है| इतना ही नही यह शब्द प्रसंग और संदर्भ के अनुसार परिवर्तित होने चाहिए साथ ही विभिन्न पर्यायवाची शब्दों का चयन तथा शब्द के कोषागत विभिन्न अर्थो में से सही शब्दों का चयन करना भी एक समस्या अनुवादक के सामने होती है|

"उदा. रहिमन पानी रखिए, बिनु पानी सब सून|

पानी गये न उबरे, मोती मानुस चुन|

यहाँ पानी का अर्थ है , 'चमक',' इज्जत', 'पानी' तीन-तीन अर्थ वाला एक शब्द हो तब कही इसका अनुवाद हो सकेगा|"3

इ) सांस्कृतिक प्रतिकों के समतुल्य शब्दों के प्रयोग की समस्या-

हर भाषा की संस्कृति अलग -अलग होती है , उनके सांस्कृतिक प्रतिक अलग- अलग होते है , जैसे खान-पान संबंधी, वस्त्र रहन सहन संबंधी , खेल संबंधी, धार्मिक संस्कृती से संबंधित एवं संबंधों से जुड़ी शब्दावली अलग अलग होती है|

उदा. आईस्क्रीम, खीर, घागरा, पगडी, सलवार, साडी, गिल्ली-डंडा, हॉकी, कबड्डी, संस्कार, कर्म, ज्ञान, होली, दिवाली, मासी, चाची, मामा, मौसाजी आदी शब्द के लिए समतुल्य शब्द ढूंढना और उचित शब्द का चयन करना यह अनुवादक की समस्या होती है| क्योंकी कुछ ऐसे शब्द है जिनके लिए लक्ष भाषा में कोई पर्यायवाची शब्द नहीं मिलते|

ई) भाषिक प्रकृति के स्तर पर समस्या-

हर भाषा की प्रकृति अलग- अलग होती है, भाषिक संरचना भी अलग- अलग होती है इसी कारण पदक्रम तथा अन्वय संबंधित समस्या अनुवादक के सामने खड़ी हो जाती है शब्द का क्रम बदलने से अनुवाद का अर्थ भी बदल जाता है| व्याकरणिय प्रयुक्ती के स्तर पर भी समस्या आती है जैसे लिंग, वचन, कारक संबंधी तथा क्रियासंबंधी समस्या उत्पन्न होती है| इसीलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं की संरचना परिचित होनी चाहिये|

उ) मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या-

लक्ष भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमी तथा रिती- रीवाजों , परंपराओं की जानकारी के अभाव के कारण मुहावरें तथा लोकोक्तियों के अनुवाद में समस्या आ सकती है| स्त्रोत भाषा तथा लक्ष भाषा के सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विषमता के कारण दोनों भाषाओं की प्रकृति अलग- अलग होती है |इस प्रकृति की जानकारी अनुवादक को रखनी चाहिए|

समाधान-

1) स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा का ज्ञान आवश्यक हैं|

2) स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा की प्रकृति को समझना चाहिये|

3)व्याकरण का ज्ञान आवश्यक हैं|

4) दोनों भाषाओं की प्रयुक्ति का ज्ञान आवश्यक हैं|

5) सांस्कृतिक संदर्भों की खोज़ करनी चाहिये|

6) लिप्यंतरण करें एवं समतुल्य शब्दों और पाद- टिप्पणीयों का प्रयोग करना चाहिए|

7) मानक पारिभाषिक शब्दावली वैज्ञानिक, तकनीकी, मानवीकी शब्दावली का ज्ञान आवश्यक हैं|

8) प्रामाणिक शब्दकोशों का उपयोग करना चाहिए|

2) विशिष्ट अनुवाद की समस्याएँ

1) सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ -

साहित्यिक अनुवाद को पुन:सृजन कहा जाता है , इसलिये इस संदर्भ में हम पद्यानुवाद तथा गद्यानुवाद की समस्याएँ देखेंगे|

अ) पद्यानुवाद की समस्याएँ -

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1) काव्य का नाद सौंदर्य, अलंकार, छंद ,लय तथा भावों और विचारों के अनुवाद की समस्या उत्पन्न हो सकती है| लय के बिना अनुवाद सपाट और रंगहीन बनता है तथा लय से ही कविता की संवेदनशीलता का बोधन होता हैं|स्त्रोत भाषा के छंद को ही आपना कर अगर लक्ष भाषा में अनुवाद किया जाए तो अनुवाद सफल रहता है|

उदा. फिट्जेरॉल्ड द्वारा किया गया उमर खैयाम की रुबाईयों का अनुवाद और हरिवंशराय बच्चन ने किया हुआ रुबाईयों का अनुवाद इसमे अंतर है |हरिवंश राय बच्चन का अनुवाद सृजन की श्रेणी में आता है क्युकी उन्होंने उमर खैंयाम के ही छंद को अपनाया है|

इस संदर्भ मे भोलानाथ तिवारी कहते है-"काव्यानुवाद के लिए अनुवाद को साहित्य रस का आनंद लेने वाला हृदय चाहिये व काव्य सृजन की अप्रतिम प्रतिभा भी चाहिये | यदि ये दोनों तत्त्व विद्यमान हो तो काव्य का अनुवाद भी निश्चित रूप से अच्छा ही होगा|"4

2) समतुल्य भाषिक अभिव्यक्ति की समस्या-काव्य में आये शब्द के लिए समतुल्य शब्द मिले तो ही अनुवाद हो सकता है अन्यथा अनुवाद करना कठीन कार्य बन जाता है|

उदा. खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ बन बीच गुलाबी रंग|

लक्ष भाषा में बिजली का अर्थ समतुल्य मिल जाये तो ही अनुवाद रंजक हो जायेगा|

आ) गद्यानुवाद की समस्याएँ -

गद्यानुवाद मे कथा, उपन्यास ,नाटक ,निबंध आदि का अनुवाद आता है|गद्यानुवाद में स्त्रोत भाषा में आए प्रतिक बिंबों का समतुल्य प्रतिक और बिंब लक्ष्य भाषा में मिलने की समस्या उत्पन्न होती है |सांस्कृतिक प्रतीक जैसे कुंभकर्ण, उबटन, व्रतगान, तीज़- त्योहार लक्ष्य भाषा में समतुल्य भाव से परावर्तित करने में समस्या उत्पन्न होती है|ऐसे ही अलंकार, अभिदा,लक्षणा,और व्यंजना के अनुवाद की समस्या उत्पन्न होती है |भौगोलिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार भाषा में मुहावरे तथा लोकोक्तियां प्रचलित होती है, स्त्रोत भाषा की लोकोक्तियां तथा मुहावरे अपने सही अर्थ एवं भाव के साथ लक्ष्य भाषा में परावर्तित करना एक समस्या होती है | नाटक के अनुवाद में अभिनेयता के अनुवाद की समस्या उत्पन्न होती है|

2)वैज्ञानिक अनुवाद की समस्याएँ -

ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगों द्वारा प्रगति हुई हैं|इसकी जानकारी अनुवाद के माध्यम से विश्वभर पहुंच जाती है|

स्त्रोत भाषा की भाषिक संरचना , शब्दचयन, सांस्कृतिक विशेषता, शैली, व्याकरण भाषा सौष्ठव आदि की जानकारी तथा वैज्ञानिक शब्दावली का ज्ञान अनुवादक होना चाहिये |अनुवादक को विज्ञान विषय का आधारभूत ज्ञान होना चाहिये| समानार्थक शब्द तथा उपयुक्त शब्दों का चयन करने की क्षमता अनुवाद में होनी चाहिये अन्यथा स्त्रोत भाषा के ज्ञान के अभाव के कारण समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है |साथ ही वैज्ञानिक सूत्रों एवं संक्षिप्तियों की समस्या भी आ सकती है|

3) सांस्कृतिक अनुवाद की समस्याएँ -

सबसे अधिक कठिनाई सांस्कृतिक अनुवाद में आती है | प्रत्येक संस्कृति की अपनी विशेषताएँ होती है , अभिव्यक्ती होती है इन विशेषताओं और अभिव्यक्तीयों को समतुल्य भावों के साथ अनूदित करना एक बड़ी समस्या होती है|

उदा. अंगद के पैर, द्रौपदी का चीर, भीष्म प्रतिज्ञा, सोने की लंका, जनेऊ, हलवा, कचौड़ी, चाचा नेहरू, मामा, ताऊ, काका आदि शब्दों के लिए समतुल्य शब्द ढूंढना अनुवाद की समस्या होती है|

4) प्रशासनिक/ कार्यालयीन तथा विधी संबंधी अनुवाद की समस्याएँ

प्रशासनिक/ कार्यालयीन तथा विधी संबंधी अनुवाद एक अत्यंत कठीण कार्य होता है ,भोलानाथ तिवारी जी लिखते है-"सरकारी अभिलेखों तथा सरकारी कामकाज का विधिक (कानूनी) महत्त्व होता हैं अत: इसके अनुवाद में थोड़ी- सी भी चूक अर्थ का अनर्थ कर सकती है |अनुवाद की एक छोटी-सी भूल करोड़ो रुपए का नुकसान कर सकती है|"5

प्रशासनिक/ कार्यालयीन तथा विधी संबंधी अनुवाद में शब्दावली , अभिव्यक्ती तथा व्यवहारीक पहलू के संदर्भ में समस्या उत्पन्न होती है|

समाधान-

1) आंतरराष्ट्रीय शब्दों का अनुवाद नही करना चाहिए उसका लिप्यंतरण कर लेना चाहिए|

2) अनावश्यक संस्कृतकरण नही करना चाहिए|

3) विज्ञान के सूत्र रोमन अथवा ग्रीक वर्णमाला मे प्रयोग किये जाये|

4) चिन्हों का प्रयोग उनके प्रचलित रूप में किया जाये|

5)अनुवाद तथ्यात्मक होना चाहिये|

6) विज्ञान के पारिभाषिक शब्द स्पष्ट और सुनिश्चित करे|

7) प्रशासनिक /कार्यालयीन तथा विधी संबंधी शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए|

8) सांस्कृतिक प्रतिक बिंबो के नाम वही रखे और उसे पाद टिप्पणी व्याख्यायित करें|

9) स्त्रोत भाषा और लक्ष भाषा के व्याकरणिक ज्ञान की जानकारी रखें|

10) बृहद एवं प्रामाणिक शब्दकोशों का उपयोग करें|

11) अनुवादक अपनी सृजनक्षमता का उपयोग करें|

अत: हम यह कह सकते है की अनुवाद में अनेक समस्याएँ आती है लेकिन उपर्युक्त समाधान के साथ अगर हमने अनुवाद कार्य किया तो वह समस्याएँ कम हो सकती है और हमारा अनुवाद का कार्य सरल तथा मौलिक होने मे मदद हो सकती है|

संदर्भ -

1) अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रविधि- भोलानाथ तिवारी पृष्ठ 108

2) अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग - जी गोपीनाथन पृष्ठ 14

3) अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रविधि- भोलानाथ तिवारी पृष्ठ 168

4) अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रविधि- भोलानाथ तिवारी पृष्ठ 163

5) अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रविधि भोलानाथ तिवारी पृष्ठ182